# परमात्म ऊर्जा

जैसे साइंस रिफाइन होती जाती है, ऐसे अपने आप में साइलेन्स की शक्ति व अपनी स्थिति रिफाइन होती जा रही है? जब रिफाइन चीज़ होती है उसमें क्या-क्या विशेषता होती है? रिफाइन चीज़ जो होती हैं उनकी क्वांटिटी भले कम होती है लेकिन क्वालिटी पॉवरफुल होती है। जो चीज़ रिफाइन नहीं होगी उसकी क्वांटिटी ज़्यादा, क्वालिटी कम होगी। तो यहाँ भी जबकि रिफाइन होते जाते हैं तो कम समय, कम संकल्प, कम एनर्जी में जो कर्त्तव्य होगा वह सौ गुणा होगा और हल्कापन भी हो जाता। हल्केपन की निशानी होगी- वह कब नीचे नहीं आवेगा, ना चाहते भी स्वतः ही ऊपर स्थित रहेगा। यह है रिफाइन क्वालिफिकेशन। तो अपने में यह दोनों विशेषताएं अनुभव होती जाती हैं? भारी होने कारण मेहनत ज़्यादा करनी होती है। हल्का होने से मेहनत कम हो जाती है। तो ऐसे नैचुरल परिवर्तन होता जाता है। यह दोनों विशेषताएं सदा अटेन्शन में रहें। इसको सामने रखते हुए अपनी रिफाइननेस को चेक कर सकते हो। रिफाइन चीज़ जास्ती भटकती नहीं, स्पीड पकड़ लेती है। अगर रिफाइन ना होगी, कीचड़ा मिक्स होगा तो स्पीड पकड़ नहीं सकेगी, निर्विघ्न चल ना सकेंगे। एक तरफ जितना-जितना रिफाइन हो रहे हो, दूसरे तरफ उतना ही छोटी-छोटी बातें व भूलें व संस्कार जो हैं उनका फाइन भी बढ़ता जा रहा है। एक तरफ वह नज़ारा, दूसरे तरफ रिफाइन होने का नज़ारा, दोनों का फोर्स है। अगर रिफाइन नहीं तो फाइन समझो। दोनों साथ-साथ नज़ारे दिखाई दे रहे हैं। वह भी अति में जा रहा है और यह भी अति प्रत्यक्ष रूप में दिखाई देता जा रहा है। गुप्त अब प्रख्यात हो रहा है। तो जब दोनों बातें प्रत्यक्ष हों उसी अनुसार ही तो नंबर बनेंगे। माला हाथ से नहीं पिरोनी है। चलन से ही स्वयं अपना नंबर ले लेते हैं। अभी नंबर फिक्स होने का समय आ रहा है। इसलिए दोनों बातें स्पष्ट दिखाई दे रही हैं और दोनों को देखते हुए साक्षी हो हर्षित रहना है। खेल भी वही अच्छा लगता है जिसमें कोई बात की अति होती है। वही सीन अति आकर्षण वाली होती है। अभी भी ऐसी कशमकश की सीन चल रही है। देखने में मजा आता है ना। व तरस आता है? एक तरफ को देख खुश होते, दूसरे तरफ को देख रहम पड़ता। दोनों का खेल चल रहा है।

आज खेल दिखाया कि पर्दे पर क्या चल रहा है। वतन से तो बहुत स्पष्ट दिखाई देता है। जितना जो ऊंच होता है उनको स्पष्ट दिखाई देता है। जो नीचे स्टेज पर पार्टधारी उनको कुछ दिखाई दे सकता? कुछ भी दिखाई दे सकता? साक्षी हो ऊपर से सभी स्पष्ट दिखाई देता है। आज वतन में वर्तमान खेल की सीन देख रहे थे।

# कथा सरिता

# शत्रु का शत्रु मित्र होता

एक ब्राह्मण था। वह बहुत गरीब था और पूजा पाठ करके अपना घर चलाता था। उसके पास पहनने के लिए अच्छे कपड़े भी नहीं थे। एक बार एक यजमान ने ब्राह्मण की दरिद्रता देखकर उसे दान में दो बछड़े दे दिए। ब्राह्मण खुशी-खुशी बछड़ों को अपने साथ ले आया। ब्राह्मण बछड़ों का बहुत ख्याल रखता था, उन्हें समय पर चारा पानी देता था। कुछ समय बाद दोनों बछड़े बड़े हो गए और देखने में शरीर से काफी हष्ट-पुष्ट थे।

एक दिन एक चोर की नज़र उन बछड़ों पर पड़ी। चोर ने सोचा - " क्यों न इन बछड़ों को चुरा लूं। ये काफी हष्ट-पुष्ट हैं इन्हें बेच कर मुझे बहुत सारा धन मिल जाएगा। चोर ने दूसरे ही दिन बछड़ों को चुराने की योजना बना ली। चोर रात में अपने गाँव से चोरी करने के लिए निकल गया। जब वह रास्ते में था तभी उसे एक डरावना व्यक्ति मिला जो शरीर से बलशाली दिख रहा था। उसके बड़े-बड़े दांत बाहर निकले हुए और बाल बढ़े हुए थे। चोर उसे देख कर डर गया और चोर ने डरते हुए उसका परिचय जानना चाहा।

राक्षस ने बतलाया कि वह ब्रह्मराक्षस है। ब्रह्मराक्षस ने चोर से उसका परिचय पूछा और जानना चाहा कि इतनी रात में वह कहाँ जा रहा है। चोर ने बतलाया कि वह एक चोर है और ब्राह्मण के यहाँ बछड़ों की चोरी करने जा रहा है। चोर की बात सुनकर राक्षस बोला- "मुझे भी अपने साथ रख लो मैंने कई दिनों से खाना नहीं खाया है, मैं उस ब्राह्मण को खाकर अपना पेट भर लूँगा और तुम वहाँ बछड़े चुरा लेना। अगर तुम ऐसा नहीं करते तो मैं तुम्हें खा लूँगा।"

डर के कारण चोर ब्रह्मराक्षस को अपने साथ ले गया। दोनों ब्राह्मण के घर के पास जाकर छुप गए। तभी राक्षस ब्राह्मण को खाने के लिए जाने लगा। उसे जाता हुआ देखकर चोर ने उसे रोका और कहा - "तुम इस प्रकार जल्दबाजी करोगे तो ब्राह्मण जाग जायेगा और मैं बछड़े नहीं चुरा पाऊंगा इसीलिए पहले मुझे बछड़े चुरा लेने दो फिर तुम जाकर ब्राह्मण को खा लेना।"

दोनों एक-दूसरे की बात मानने के लिए तैयार नहीं हुए। इस प्रकार दोनों में तू-तू, मैं-मैं और झगड़ा होने लगा। दोनों के झगड़े की आवाज़ सुनकर ब्राह्मण जाग गया और उसे सारा माजरा समझ आ गया। ब्राह्मण ने पास रखी एक लाठी उठाई और दोनों को मारने लगा। लाठी खाकर चोर और राक्षस दोनों वहाँ से भाग गए।

**शिक्षा :** इस कहानी से हमें शिक्षा मिलती है कि दो शत्रुओं की लड़ाई से तीसरे का फायदा हो जाता है।

हाथरस-उ.प्र.। नवरात्रि के प्रथम दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में मातृशक्तियों व शिवशक्तियों का सम्मान करने के पश्चात् समूह चित्र में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शान्ता बहन, ब्र.कु. मीना,दिव्यधाम तथा अन्य माताएं-बहनें।

रघुवीरपुरी-अलीगढ़(उ.प्र.)। सेवाकेन्द्र पर होली के उत्सव पर आयोजित कार्यक्रम में ठाकुर शिवराज सिंह,उपाध्यक्ष ब्रज मंडल भाजपा, राजेश तोमर,सेवानिवृत्ति राजस्व निरीक्षक, अनुपम जैन,प्रधानाचार्य जैन विद्यालय, ब्र.कु. सुनीता तथा अन्य।

नदबई-भरतपुर(राज.)। 89वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती महोत्सव के अवसर पर विधायक की धर्मपत्नी सौम्या सिंह एवं नगरपालिका अध्यक्षा श्रीमती हरवती देवी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. संतोष, ब्र.कु. प्रीति एवं ब्र.कु. कमलेश।

देहरादून-उत्तराखंड। ब्रह्माकुमारीज़ देहरादून की तरफ से 'राजयोग जागरुकता दौड़' के लिए आयोजित मिनी मैराथन के पश्चात् चित्र में ब्र.कु. सुशील, ब्रह्माकुमारीज़ खेल प्रभाग के समन्वयक ब्र.कु. जगबीर सिंह, ब्रिगेडियर विक्रम सिंह, ब्र.कु. मंजू एवं ब्र.कु. गीता।

बयाना-राज.। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. कमलेश, ब्र.कु. साक्षी तथा अन्य माताएं-बहनें।

अस्का-ओडिशा। सेवाकेन्द्र पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. प्रभाती, सहकारी निर्बाही जंत्री,जल ओ परिमल विभाग, श्रीमती चिन्मई राउत, श्रीमती सुब्रता मिश्र,सहकारी कृषि अधिकारी, झरपारी सरपंच श्रीमती माधुरी भूयाँ, पढाल सरपंच श्रीमती लक्मी बेहेरा तथा अन्य।

डाकपत्थर-उत्तराखंड। नवजामुनि नगर पालिका अध्यक्षा श्रीमती नीरू देवी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सविता। साथ हैं अन्य भाई-बहनें।